रहते थे। सब मंत्री अपने विभागों की पूर्ण जानकारी रखते थे और अन्याय करने पर अपने पुत्रों को भी दण्ड देने में तनिक भी संकोच नहीं करते थे। ऐसे गुणी मंत्रियों से युक्त होकर महाराज दशरथ ने सम्पूर्ण पृथिवी की प्रजा का, अपने पुत्रों के समान, पालन किया था। यह था वैदिक संस्कृति के सूर्यवत् प्रकाश में ज्ञानसम्पन्न राजा/राजनेताओं का गुणगान करने योग्य चरित्र, जिनकी सुन्दर राज्य व्यवस्था में सम्पूर्ण प्रजा सुख सम्पन्न, धर्मयुक्त, धन सम्पन्न एवं प्रत्येक प्रकार से सुरक्षित कही गई है। परन्तु दुर्भाग्यवश वैदिक संस्कृति का लोप होने से, आज की स्वार्थपूर्ण, स्वयंभू

राजनीति ने भारत जैसे महान देश की गरिमा को धन, सुरक्षा, कृषि, विज्ञान, न्याय, व्यवसाय, खेलकूद, धर्मस्थापना एवं सुख शांति इत्यादि प्रत्येक क्षेत्र में ठेस पहुँचाई है।

यह भारत ऋषियों-मुनियों की वह पवित्र भूमि है जिसका नामकरण ही ऋग्वेद मंत्र 10/110/8 में " आ नो यज्ञं भारती तिस्त्रो देवी सरस्वती " में आए "भारती" शब्द के आधार पर किया गया है। भारती शब्द का अर्थ महर्षि यास्क ने निरुक्त ग्रंथ 8/13 में "भरत आदित्यस्तस्य भाः" किया है। भरत नाम आदित्य अर्थात् सूर्य का है। "भा" शब्द का अर्थ रोशनी है, जैसे चाँद की रोशनी को चाँदनी कहते हैं उसी प्रकार भरत (सूर्य) की भा

(रोशनी) भारती है। भारती शब्द का अर्थ संस्कृति है। अतः भारत की वैदिक संस्कृति भारती है। ऋषियों द्वारा दिया हमारे देश का नाम "भारत" है। विश्व में अन्य किसी राष्ट्र का ऐसा गुणसम्पन्न नाम नहीं है। "यथा नाम तथा गुण" इस कथनानुसार पिछले तीन युगों में जब तक भारत भूमि पर वैदिक संस्कृति का सूर्य उगता रहा, तब तक हमारा देश समस्त विश्व में सूर्य की किरणों के समान ज्ञान, कर्म एवं उपासना का प्रकाश करके "विश्व गुरु" एवं वर्चस्व, शौर्य, पुरुषार्थ, कर्तव्य आदि निष्ठापूर्वक निभाने में प्रवीण होने तथा दुश्चरित्र एवं दुर्गुणों से दूर होने के

कारण "सोने की चिड़िया" कहलाता रहा। राजा/राजनेताओं द्वारा ही धर्म स्थापित किया जाता है परन्तु जब देश के रक्षक ही भक्षक हो जाएं तब सुधार के लिए कोई किसी को क्या कहे?

हमने वेदों के आदेश तो पहले ही ताक पर रख छोड़े हैं परन्तु यदा-कदा ही संस्कृति अथवा रक्षार्थ सम्मेलन में कभी वेदशास्त्र गरिमा विवशता से सुनना भी पड़े तो यह सुनना प्रायः ऐसा होता है कि एक पंडितजी यजमान के यहाँ कथा कर रहे थे। कथा में यजमानजी सो रहे थे। किसी ने उनको जगाते हुए कहा कि आप कथा में सो रहे हैं। तब नींद से जागते हुए यजमानजी बोले - अरे भाई! घर के पंडित हैं, कोई झूठ थोड़े ही बोलेंगे। वैदिक संस्कृति की इस प्रकार की अनदेखी, औपचारिकता और पुरुषार्थहीनता

ही ने तो भारतवर्ष को गुलाम बनाया था और अब इसकी दुर्गति का पथ प्रशस्त किया हुआ है। वास्तव में इस घर को आग लग गई घर के चिराग से। इस प्रकार वेदों के परम्परागत ज्ञान के उल्लंघन ने अन्त में फिर वही दुराग्रही के पतनाले वाला प्रश्न खड़ा कर दिया है, लगता है कि सुरक्षा एवं शांति के विषय में अनदेखी करके हमारे नेताओं का झूठी तसल्ली वाला पतनाला वैसे का वैसा ही बहेगा और इस आपस की लड़ाई में विदेशी शक्तियाँ पन्च बनकर लाभ उठाती रहेंगी। देश की दुःखी जनता गरीबी, असुरक्षा, अन्याय आदि से कब और कैसे बच पाएगी, इसका उत्तर अतीत में कौन देगा, यह वर्तमान

की एक अनसुलझी गुत्थी है। अतः बताओ अब फिर दलगत गठजोड़ धर्म की आड़ (मज़हब), जातिवाद झूठे वायदे वाली राजनीतिक पार्टी अथवा अन्य केवल कुर्सी की लालसा रखने वाली पार्टी को किस कामना से वोट दें?